संस्थान में एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन

केन्द्रीय पटसन एवं समवर्गीय रेशा अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर, कोलकाता की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वावधान में दिनांक 08 जुलाई, 2015 को एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला की अध्यक्षता संस्थान के निदेशक, डा. पी.जी. कर्मकार जी ने की। निदेशक महोदय ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में कहा कि हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन कार्यालय में संघ की राजभाषा नीति का मूलमंत्र सद्भावना, प्रेरणा एवं प्रोत्साहन का परिचायक है। इनके माध्यम से ही हम कर्मचारियों को राजभाषा में कार्य करने के दौरान उत्पन्न होने वाली आम कठिनाईयों का निराकरण करने का प्रयास करते हैं और धीरे–धीरे हम अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर हो रहे हैं। उन्होंने आगे संस्थान में कार्यालयीन कार्यों में उनका ज्यादा से ज्यादा प्रयोग करने पर भी बल दिया। साथ ही उन्होंने कार्यशाला में अर्जित ज्ञान को पुरी निष्ठा से कार्यालयीन काम–काज में यथोचित सदुपयोग सुनिश्चित करने की अपील भी की। डा. डी.के. कुण्डु, प्रभागाध्यक्ष, फसल उत्पादन प्रभाग ने अपने संबोधन में कहा कि संस्थान में हिन्दी कक्ष के प्रयास से हिन्दी में अच्छा कार्य हो रहा है तथा हिन्दी हमारी सभ्यता व संस्कृति की पहचान है इसलिए प्रत्येक व्यक्ति का दायित्व बनता है कि अधिक से अधिक कार्य हिन्दी में करें। डा. एस. सत्पथी, प्रभागाध्यक्ष, फसल सुरक्षा ने अपने वक्तव्य में कार्यालयीन के कामकाज में हिंदी को बढ़ावा देने की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने आगे कहा कि कार्यशाला के जरिये अधिकारियों एवं कर्मचारियों को प्रशिक्षित कर संस्थान में हिंदी के कामकाज में बढ़ोत्तरी ला सकते हैं। डा. एस. मित्रा, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी, ए.आई.एन.पी. ने कहा कि भारतवर्ष की 70 प्रतिशत से भी अधिक आबादी हिन्दी को बोल–चाल की भाषा के रूप में व्यवहार करती है। साथ ही हिन्दी आज भी विश्व की बोली जाने वाली भाषाओं में दूसरे स्थान पर है। अतः हम सब का कर्तव्य बनता है कि हम इसे और अधिक समृद्ध एवं व्यापक बनायें। डा. रितेश साहा, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रभारी, कार्यालय प्रधान ने अपने भाषण में कहा कि हिन्दी हमारे देश में बोली जानी वाली भाषाओं में से वो भाषा है जिसे सरकारी काम–काज के लिए भारत की राजभाषा के रूप में चुना गया है। आगे उन्होंने कहा कि सबको कार्यशाला का लाभ उठाते हुए हिन्दी का अध्ययन नियमित रूप से करते रहना चाहिए। डा. सुरेन्द्र कुमार पाण्डेय, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रभारी, हिन्दी कक्ष ने कहा कि संविधान निर्माताओं ने कई कारणों से राजभाषा की आवश्यकता को महसूस किया। उनका उद्देश्य एक राजभाषा के माध्यम से देश के लोगों में एकता की भावना को उत्पन्न कर लोकतंत्र को मजबूत और सफल बनाना तथा अखिल भारतीय स्तर पर गठित शासन व्यवस्था में सरकारी काम में सुगमता लाना था। साथ ही विश्व में अपनी भाषाई पहचान बनाना भी शामिल था। उन्होंने कहा कि संविधान निर्माताओं की भावनाओं का सम्मान करते हुए और राजभाषा हिन्दी की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए अधिकारी एवं कर्मचारीगण कार्यालयों कार्यों में राजभाषा हिन्दी का यथासंभव प्रयोग करें ताकि वास्तव में राजभाषा हिन्दी काम–काज की मूल भाषा का स्थान ले सके।

हिन्दी कार्यशाला के दौरान मुख्य अतिथि एवं वक्ता श्री लखन कुमार सिंह, हिन्दी प्राध्यापक, हिन्दी शिक्षण योजना, भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, निजाम पैलेस, कोलकाता ने प्रतिभागियों को हिन्दी पत्राचार तथा टिप्पण आलेखन के बारे में जानकारी दी। इसके साथ ही हिंदी को सरलतम ढंग से कैसे प्रयोग किया जाए, जिससे कि यह कार्यालयीन कामकाज की भाषा बन सके, इस पर भी उन्होंने प्रकाश डाला। उन्होंने आगे लिपि, वर्तनी एवं मानक शब्दावली के बारे में भी प्रतिभागियों का मार्गदर्शन किया जिस पर प्रतिभागियों द्वारा बड़ी संख्या में प्रश्न पूछकर अपना ज्ञानार्जन किया गया।

कार्यशाला का समापन डा. सुनीति कुमार झा, प्रधान वैज्ञानिक, कृषि प्रसार के धन्यवाद ज्ञापन के साथ सम्पन्न हुआ।